Knowledge Consortium of Gujarat
Department of Higher Education - Government of Gujarat
Journal of Humanity
ISSN: 2279-0233
Continuous issue-22 |January – March 2016

मैत्रेयी पुष्पा की रचनाओं में लोक संस्कृति

बीसवीं सदी के अंतिम दशक में कथासाहित्य-लेखन में पदार्पण करनेवाली मैत्रेयी पुष्पा हिन्दी साहित्य की ऐसी रचनाकार हैं जिनका कथासाहित्य नारी केन्द्रित होने के साथ-साथ लोक संस्कृति से भी सरोकार रखता है । भारतीय लोकजीवन के क्षेत्र में प्रचलित विभिन्न प्रथाओं एवं संस्कारों को मैत्रेयी पुष्पा ने अपनी रचनाओं में स्थान दिया है । भारतीय जीवन में व्यक्ति के जीवन को उन्नत बनाने के लिए सोलह संस्कारों का शास्त्रीय विधान है किन्तु इन संस्कारों से संबद्ध रीति रिवाजों में परम्परा का तत्व व लोक का संस्पर्श प्रधान हो जाता है । मैत्रेयी पुष्पा की सभी रचनाओं में लोकरीतियों व संस्कारों का वर्णन प्राप्त होता है ।

समय-समय पर इन संस्कारों का पालन आज भी परंपरागत रूप से प्रचलित है । संस्कार, धर्म, दर्शन, व्रत, पर्व आदि लोक संस्कृति के प्रतीक हैं, जिनके द्वारा जाति विशेष के इतिहास व परंपरा का परिचय मिलता है । साहित्य में इनकी उपस्थिति से तत्कालीन सामाजिक, आर्थिक एवं धार्मिक स्थितियों, मान्यताओं आदि का भी पता चलता है । ये उत्सव जाति विशेष के ओज, शौर्य व समृद्धि के परिचायक होते है । समाज को गतिशील एवं जीवंत बनाये रखने में संस्कारों, तीज-त्यौहारों, पर्वों आदि का अतुलनीय योगदान होता है; लोक की भूमिका अत्यन्त व्यापक और महत्वपूर्ण है । अतः किसी देश की संस्कृति को समझने के लिए वहाँ के उत्सवों एवं त्योंहारों का दर्शन व अध्ययन करना जरूरी है । ये जातीय संस्कृति की जीवन्तता के प्रतीक हैं । पर्व त्यौहार के संदर्भ में शिवपूजन सहाय लिखते हैं - "किसी देश के पर्व त्यौहार देखकर ही उसके बड़प्पन या छुटपन का अंदाज किया जाता है । पर्व-त्यौहार को सुन्दरता से मनाना ही जीती-जागती जाति का लक्षण है।"[1]

हिन्दुओं का प्रत्येक दिन त्यौहार होता है और भारतीय समाज इन त्यौहारों को अत्यंत उत्साह से मनाता है । मैत्रेयी पुष्पा की रचनाओं में मकरसंक्रांति, दिवाली, होली, रक्षाबंधन आदि पर्वो का उल्लेख मिलता है । मैत्रेयी ने अपनी रचनाओं में मधुश्रावणी पर्व का उल्लेख किया है जो बुंदेलखण्ड-अंचल की विशेष संस्कृति को दर्शाता है । 'अगनपाखी' उपन्यास में सावन-भादों में आनेवाले पर्व का उल्लेख मिलता है - "आया सावन । गाँव की बेटियों को लिवाने जेठ, ससुर भादों में आए ।"[2] उत्तर भारत के कई क्षेत्रों में गुड़िया का त्यौहार भी इसी प्रकार मनाया जाता है । इसी प्रकार मैत्रेयी पुष्पा ने 'चाक' में होली पर मनायी जानेवाली बुंदेलखंड की एक और परंपरा का भी उल्लेख किया है जो वहाँ की संस्कृति की पहचान है । बुंदेलखंड में होली की जगह 'बसौरा' पूजन

की भी परंपरा है जो कुछ इस तरह दिखाया गया है "गाँव में होली तो कौन मनाता ? बसौरा (शीतला माता की बासी भोजन से पूजा) भी नहीं किया । औरतें जमा होती थी शीतला के थान पर।"[3] होली, बसौरा खुशी का त्यौहार है पर जब गाँव में किसी की मृत्यु हो जाती है तो न तो होली मनाई जाती है और न ही बसौरा होता है । यहाँ गुलकंदी, बिसुनदेवा और हरिप्यारी के मौत के कारण पूरे गाँव में मातम छाया हुआ है । ग्रामीण क्षेत्र में सभी एक दूसरे के सुखदुख में शामिल रहते हैं, अतरपूर में भी सभी लोग पर्वो से सुख-दुःख में सभी सहभागी होते दिखाए गए हैं । तीज-त्यौहार तो आपसी भाईचारा और जीवंतता के प्रताक होते हैं; मैत्रेयी पुष्पा की 'गुडिया भीतर गुडिया' में होली, दीवाली अलग-अलग धर्म के लोगों के आपसी मेल-जोल के संदर्भ में आया है - "होली, दिवाली का उल्लास ईद बकरीद को मिलान उत्साव और आपसी मेल में ऐसे सुनहरे जाल बुन दिये कि सच्चाईयाँ भ्रम के रूप में बनी रही।"[4]

मैत्रेयी पुष्पा की रचनाओं में कई ऐसे स्थल है जिनमें लोक संस्कृति की झलक वहाँ वे लोगों की बातचीत, रहन-सहन, कार्यविधियाँ, तीज-त्यौहार, व्रत-पूजापाठ आदि के माध्यम से देखा जा सकता है जिनमें से कुछ का प्रस्तुतिकरण निम्न कथनों द्वारा होता है ।

'विजन' उपन्यास में 'फेको' तकनीक 'शरण आई सेंटर' में लगने पर कार्य के निर्विघ्न संपन्न हो जाने और भगवान से मन्नत माँगने पर पूरा हो जाने के उपलक्ष मे डॉ. नेहा की सास अस्पताल में गणेश की मूर्ति की स्थापना करती है और निर्जला उपवास रखती है - "एक दिन पहले से अजय की माँ निर्जला उपवास पर थी । ग्यारह ब्राह्मणों का भोज किया था । वस्त्र और दक्षिणा साथ में थी । पूजा पाठ का माहौल जैसे मरीजों के लिए पवित्र वातावरण रचा गया है ।"[5] इसी प्रकार 'चाक' के माध्यम से लेखिका ने दिखाया है कि समय के साथ-साथ पर्व, त्यौहार, व्रत, संस्कार आदि हमारे जीवन में प्रवेश भी करते है और जड़ होती परंपराएँ टूटती भी हैं । उपन्यास की नायिका सारंग जाटनी है । जाटों में करवाचौथ नहीं मनाया जाता है लेकिन जब से संचार क्रांति आई, लोगों का शहरों में आना जाना शुरू हुआ है तब से ग्रामीण संस्कृति में भी परिवर्तन आया;लेखिका ने इस परिवर्तन को भी दिखाया है-- "एक जमाना था, जब जाटों में करवाचौथ नहीं मनाई जाती थी, लेकिन जब से लड़कियाँ बहुएँ अलीगढ़ हाथरस में जाकर सिनेमा-ठेठर देखने लगी हैं । तब से.... सातों कौम की स्त्रियाँ नाचती गाती है ।"[6]

ईश्वर में ग्रामीणों की अपार श्रद्धा और विश्वास उनके व्यक्तित्व की पहचान है । अपने ऊपर पड़नेवाले सुख-दुःख आपत्ति-विपत्ति सबका कर्ताधर्ता वे ईश्वर को मानते है तथा ऐसे समय पर ईश्वर को पुकारना उनकी भोली भावनाओं का परिचायक है । 'अल्मा-कबुतरी' उपन्यास में कबूतरा जनजाति अपने कष्ट में वीर देव की याद करती है - "है वीर देवता आओ ! हम बड़े कष्ट में है, आओ हमीर दै हमारे दुःख दूर करो ! गीत का सामूहिक स्वर घरों में फट गया लय और रूदन घुले मिले थे ।"[7] जिसमें ग्रामीण जीवन की भोली श्रद्धा का

चित्रण हुआ है । ग्रामीण लोगों की मान्यता है कि कार्तिक में झूठ बोलने पर पाप लगता है और ईश्वर सजा देता है । 'इदन्नमम्' उपन्यास में इसका चित्रण हुआ है - "कार्तिक नहान में झूठ नहीं बोला जाता । एक-एक बात सच बतानी पड़ती है । सखियों की बीच अंतरंग भी खोलने पड़ते है । नहीं तो पाप लगता है जिसको पाप लगेगा उसके चावलों में अंकुर फूट जायेंगे ।"[8]

आधुनिक वैज्ञानिक प्रगति व सभ्यता संस्कृति के प्रभाव से दूर अंचल विशेष के लोगों का जीवन भ्रम, भय एवं अज्ञान से भ्रमित होता है । ग्रामिणों को भूत-प्रेत व चुड़ैलों में इतना अधिक विश्वास है कि साधारण से साधारण बीमारी का कारण भी भूत-प्रेत ही कल्पित कर लेते हैं । मैत्रेयी पुष्पा के 'अल्मा कबूतरी' उपन्यास में भूत-प्रेत आदि लगने, देवी आने पर उनकी प्रतिक्रिया को दर्शाया गया है; यह भी लोकसंस्कृति का ही एक हिस्सा है ।

मैत्रेयी पुष्पा की रचनाओं में लोकगीत की झाँकियाँ प्रस्तुत की गई है । लोकगीतों व लोक-नृत्यों में लोकमानस अपने सुख-दुःख, हर्ष-विषाद सबसे पर हो जाता है । ये लोकगीत विभिन्न धार्मिक व सामाजिक परम्पराओं, मान्यताओं आदि को अभिव्यक्त करते हैं । 'कही ईसुरी फाग' उपन्यास में बुंदेली लोककवि ईसुरी की फागों में प्रेम, मिलन, बिछोह की अनुभूतियों के गीत मिलते है -

"जब से सुनी तुमें अब जाने
नई है होस ठिकानें
अबपर है मइनन की बिछुरन जे दिन कठिन दिखाने
उसेई बेदिल हरो ईसुरी, तुम कर चलीं दिमाने ।"[9]

बुंदेलखंड वीरों की धरती रही है । यहाँ शस्त्र और शास्त्र समान रूप से समृद्ध रहे है। महारानी लक्ष्मीबाई, रानी झलकारी, महाराज छत्रसाल, लाला हरदौल आदि वीर और वीरांगनाएँ पैदा हुए; जिनके शौर्य, प्रताप तथा तेजस्विता की चमक से संपूर्ण देश दैदीप्यमान हुआ है । मैत्रेयी पुष्पा की रचनाओं में बुंदेलखंड के वीर-वीरांगनाओं की वीरता के दर्शन करनेवाले वीर काव्य भी मिलते है ऐसे गीतों को 'सुआटा' कहाजाता है । उनके उपन्यास 'अगनपाखी' में 'सुआटा' का गायन हुआ है -

"सुरजमल के घुल्ला छुटे
चन्द्रमल के घुल्ला छुटे
हिमाचल की कुंअरि लड़ाइती ना रेसुआटा
बघेलिन बेटी निहोरा तिहोरा नाच ।"[10]

इन गीतो के माध्यम से लोकजीवन में वीर भावना जागृत करना ही मुख्य लक्ष्य है; जो मैत्रेयी पुष्पा के कथासाहित्य में बुंदेलखण्डी लोकजीवन और संस्कृति के माध्यम से अभिव्यक्ति हुई है । लोक और उसकी

प्रासंगिकता को रचनाकार ने भलीभाँति जाना समझा है, जिया है, तभी बुंदेलखण्ड की संस्कृति को इतनी सफल अभिव्यक्ति मिली है । मैत्रेयी पुष्पा का कथासाहित्य कथ्य और शिल्प दोनों स्तरों पर समृद्ध और उल्लेखनीय है।

संदर्भः

1. ग्राम सुधार, (पत्रिका)पृ.10
2. मैत्रेयी पुष्पा, अगनपाखी, पृ.23
3. मैत्रेयी पुष्पा, चाक, पृ.65
4. मैत्रेयी पुष्पा, गुडिया भीतर गुड़िया, पृ.83
5. मैत्रेयी पुष्पा, विजन, पृ.118
6. मैत्रेयी पुष्पा, चाक, पृ.186
7. मैत्रेयी पुष्पा, अल्मा कबूतरी, पृ.26
8. मैत्रेयी पुष्पा, इदन्मम्, पृ.118
9. मैत्रेयी पुष्पा, कही ईसुरी फाग, पृ.101
10. अगनपाखी, पृ.25

****

प्रा. नेहा एस. पारेख

गुजरात आर्ट्स एण्ड कॉमर्स कॉलेज(सांध्य)

अहमदाबाद 380006

Copyright © 2012- 2016 KCG. All Rights Reserved. | Powered By : Knowledge Consortium of Gujarat